Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

10%

Overall Similarity

Date: Dec 6, 2023
Matches: 261 / 2628 words
Sources: 3

Remarks: Low similarity detected, consider making necessary changes if needed.

Verify Report:
Scan this QR Code

अध्यापक के लिए शिक्षण सूत्र की आवश्यकता

श्रीमती प्रवीता चौहान
असि0 प्रोफेसर बी.एड. विभाग, जे.एस. विश्वविद्यालय शिकोहाबाद (फिरोजाबाद)
Email. Id- chauhanpravita@gmail.com

सारांश
बालक के पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित करते हुए यदि नया ज्ञान प्रदान किया जाता है तो बालक को उसे सीखने में रुचि व प्रेरणा प्राप्त होती है। मनुष्य सामान्यतया इसी क्रम से सीखता है। इसलिये अध्यापक को अपनी पाठ्य सामग्री इस क्रम में प्रस्तुत करना चाहिये।

मुख्य बिंदु
ज्ञात से अज्ञात की ओर , सुगम से कठिन की ओर , सूक्ष्म से स्थूल की ओर , अंश से पूर्ण की ओर , अनिश्चित से निश्चित की ओर , प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर , विशिष्ट से सामान्य की ओर , अनुभव से तर्क की ओर , आगमन विधि का अनुसरण , प्रकृति का अनुसरण , विश्लेषण से संश्लेषण की ओर , मनोवैज्ञानिक से क्रमबद्धता की ओर, स्वाध्याय को प्रोत्साहन।

प्रस्तावना
शिक्षण एक कला है और इस कला में दक्षता प्राप्त करने के लिए शिक्षक को दो बातों की आवश्यकता होती है---

1. विषय-सामग्री का पूर्ण ज्ञान।
2. ज्ञान को

छात्रों तक पहुँचाने की पाठन-शैली का वैज्ञानिक ज्ञान। विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने समय-समय पर अनेक प्रयोग करके सीखने के नियमों से परिचित कराते हुए सीखने के आवश्यक तत्वों का ज्ञान कराया है। इन शिक्षण का कार्य नियमों तथा तत्वों को शिक्षण का आधार मानते हुए शिक्षाशास्त्रियों ने अपने-अपने अनुभवों तथा निष्कर्षों को सूत्र के रूप में प्रकट किया है। इन्हीं को शिक्षण सूत्र की संज्ञा दी जाती है। इन सूत्रों का अनुसरण करने से शिक्षक अपने कार्य में सफल होता है। जिन शिक्षाशास्त्रियों ने इन सूत्रों (Maxims) के खोजने तथा निर्माण करने में सहयोग प्रदान किया है। उनमें हरबर्ट स्पेन्सर तथा कामेनियस का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए प्रत्येक शिक्षक को इन शिक्षण-सूत्रों का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

प्रमुख शिक्षण सूत्र निम्नलिखित हैं-

(1) ज्ञात से अज्ञात की ओर (From known to Unknown) - छात्रों के पूर्व ज्ञान के आधार पर नये ज्ञान को आधारित की कीजिए। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि बालक अपने पूर्व ज्ञान का सहारा लेकर नये ज्ञान को प्राप्त करता है। अतःशिक्षक के लिए आवश्यक है कि किसी विषय को पढ़ाने से पहले वह इस बात का पता लगा ले कि बालक को उस विषय का कितना पूर्व ज्ञान है। शिक्षक को इस पूर्व ज्ञान पर ही नये ज्ञान को आधारित करना चाहिए। उदाहरणार्थ, यदि बालक ताजमहल के बारे में जानता है तो इस ज्ञान के आधार पर शाहजहाँ के बारे में बताया जा सकता है। इसी प्रकार सूती उद्योग पर आर्थिक भूगोल का पाठ उन वस्त्रों से प्रारम्भ होना चाहिए, जिनको बालक पहनते हैं।

(2) सुगम से कठिन की ओर (From Easy to Difficult) - कठिन पाठों को पढ़ने से पूर्व सुगम पाठों को पढ़ाइये। शिक्षक को पाठ्य-विषय का इस प्रकार विभाजन करना चाहिए उसे अपने पहले पाठों में ही सफलता मिल जाय। यह तभी सम्भव है, जब कठिन पाठों को पढ़ाने से पूर्व सुगम पाठों को पढ़ाया जाय। प्रारम्भ में ही कठिन पाठों को पढ़ाने से छात्रों में यह विचार उत्पन्न हो जाता है कि विषय कठिन है और धीरे-धीरे उस विषय में उसकी रुचि समाप्त हो जाती है। पाठ छात्रों के लिए कठिन है या नहीं। इस बात का निर्णय शिक्षक को छात्रों की मानसिक प्रगति के आधार पर स्वयं करना चाहिए। रायबर्न का कथन है, "हमारे कार्य और पाठ हमारे छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल होने चाहिए।"

"हमारे काम और हमारे पाठों को हमारे विद्यार्थियों के मानकों के अनुरूप वर्गीकृत किया जाना चाहिए।"

-डब्ल्यू. एम. रायबर्न -

(3) सूक्ष्म से स्थूल की ओर (From Concrete to Asbstract) - स्थूल वस्तुओं का प्रयोग करके सूक्ष्म बातों को बताइए। प्रारम्भ से बालक वस्तुओं को केवल स्थूल रूप में ही जानता और समझता है। जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे उसमें सूक्ष्म बातों को समझने की शक्ति का विकास होता जाता है। उदाहरणार्थ, अल्प आयु का बालक इस सूक्ष्म बात को नहीं समझ सकता है कि 'दो और दो' = 'चार' होते हैं। पर यदि उसे दो गोलियाँ दे दी जायें और उसके बाद फिर दो गोलियाँ दे दी जायें, तो वह इस बात को सरलता से समझ जायेगा कि 'दो और दो' = 'चार' होते हैं। अत यह आवश्यक है कि छोटे बालकों को पढ़ाते समय प्रारम्भ में केवल स्थूल वस्तुओं का प्रयोग किया जाय और उनकी सहायता से सूक्ष्म बातों का ज्ञान कराया जाय। इस सम्बन्ध में स्पेंसर का कथन है, "हमारे पाठ स्थूल वस्तुओं से प्रारम्भ होने चाहिए और सूक्ष्म बातों में समाप्त होने चाहिए।"

शिक्षण का कार्य

"हमारे पाठ ठोस से शुरू होने चाहिए और अमूर्त पर समाप्त होने चाहिए।"

-हर्बर्ट स्पेंसर

(4) अंश से पूर्ण की ओर (From whole to Parts) - छात्र को पूरी बात बताने के बाद ही उसके भागों को बताइए। अवयवीवादी मनोवैज्ञानिकों (Gestalt Psychologists) के अनुसार वस्तुओं के बारे में बालक के विचार खण्डों में नहीं होते हैं। वह प्रारम्भ में केवल पूर्ण वस्तुओं को ही जानता है, उसके अंगों को नहीं। उदाहरणार्थ, जिस बालक ने मेज या कुर्सी देखी है, वह उसके पूर्ण रूप के बारे में ही सोचता है। उसके भागों के बारे में उसका सोचना असम्भव है। शिक्षक बालक के इस ज्ञान से लाभ उठाकर उसे मेज या कुर्सी के भागों के बारे में बताता है। दूसरे शब्दों में, वह अपने शिक्षण को पूर्ण वस्तु से प्रारम्भ करता है और फिर उसके विभिन्न भागों के बारे में बताता है। यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि 'पूर्ण' शब्द की व्याख्या बालक की समझने की शक्ति के अनुसार की जानी चाहिए। बालक जानता है कि पृथ्वी गोल है, पर ग्लोब की सहायता से उसे पृथ्वी का पूर्ण ज्ञान प्रदान नहीं किया जा सकता है। कारण यह है कि बालक की पूर्ण की धारणा भौतिक वातावरण तक ही सीमित होती है; इससे अधिक वह कुछ नहीं जानता ।

(5) अनिश्चित से निश्चित की ओर (From Indefinite to Definite)- छात्र के अनिश्चित ज्ञान को निश्चित रूप दीजिए। प्रारम्भ में बालक का ज्ञान अनिश्चित और अस्पष्ट होता है। शिक्षक को बालक के इसी ज्ञान को अपने शिक्षण का प्रारम्भिक बिन्दु बनाना चाहिए और फिर किसी वस्तु के बारे में प्रारम्भ में ही निश्चित ज्ञान प्रदान करना सर्वथा अनुचित है। रेमाण्ट ने ठीक ही लिखा है, "बालक के अविकसित मस्तिष्क में निश्चित विचारों को भरने के प्रयास का परिणाम केवल शाब्दिक बातें बताना हो सकता है।""अपरिपक्व मस्तिष्क में सटीक आदर्श डालने का प्रयास, मौखिक कथन के संचार में ही परिणित हो सकता है" -टी. रेमंत

(6) प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर (From seen to Unseen) - बालक को बिना देखी हुई वस्तु को पहले देखी हुई वस्तु के बारे में बताइए। बालक को पहले उन वस्तुओं का ज्ञान देना चाहिए, जिनको वह देख सकता है। उसके बाद ही उसे उन वस्तुओं के बारे में बताना चाहिए, जिनको वह देख नहीं सकता है। इसका तात्पर्य यह है कि पहले बालक को वर्तमान की बातें बतानी चाहिए और उसके बाद भूत और भविष्य की। जिन वस्तुओं को बालक देख सकता है, उनका ज्ञान उसे सरलता से हो जाता है। अतःउसे प्रत्यक्ष वस्तुओं के द्वारा अप्रत्यक्ष वस्तुओं का ज्ञान प्रदान करना चाहिए। शिक्षण के समय प्रत्यक्ष बातों, वस्तुओं और उदाहरणों का प्रयोग किया जाना चाहिए। उनको समझने के बाद बालक के लिए अप्रत्यक्ष बातों का समझना सुगम हो जाता है।

(7) विशिष्ट से सामान्य की ओर (From Particular to General) – विशिष्ट उदाहरण देकर सामान्य नियम निकलवाइये। रायबर्न (Ryburn) के अनुसार इस सूत्र का वही अर्थ है, जो 'स्थूल' से 'सूक्ष्म की ओर' सूत्र का है। अन्तर केवल यह है कि इसमें आगमन विधि का प्रयोग किया जाता है। शिक्षण का कार्य ।

(8) अनुभव से तर्क की ओर (From Empirical to Rational) - अनुभव और निरीक्षण के द्वारा प्राप्त किये गये बालक के ज्ञान को तर्कपूर्ण बनाइए। आरम्भ में बालक देखकर और अनुभव करके ज्ञान प्राप्त करता है, पर उसका यह ज्ञान तर्क पर आधारित नहीं होता है। उसे किसी बात का ज्ञान तो होता है, पर वह उस ज्ञान को तर्क का प्रयोग करके सत्य सिद्ध नहीं कर सकता है। उदाहरणार्थ, एक बालक प्रतिदिन सूर्य को निकलते और डूबते हुए देखता है। वह यह भी देखता है कि एक दिन बाद रात और रात के बाद दिन होता है। इस प्रकार उसे अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है, पर वह तर्क देकर इस ज्ञान को सत्य सिद्ध नहीं कर सकता है। वह ऐसा 'सौर-मण्डल' (Solar System) का ज्ञान प्राप्त करने के बाद ही कर सकता है। अतःअनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान को तर्कपूर्ण बनाना आवश्यक है। कुछ शिक्षाशास्त्रियों का मत है कि बालक को प्रत्येक बात का ज्ञान पहले अनुभव के द्वारा प्राप्त करना चाहिए और फिर उसे तर्कपूर्ण बनाना चाहिए। इस सम्बन्ध में स्पेंसर का कथन है, "प्रत्येक अध्ययन का पूर्ण प्रयोगात्मक प्रारम्भ होना चाहिए, जिससे
कि वह अनुभव के स्तर से गुजर कर तर्क के स्तर पर पहुँच सके।" "प्रत्येक अध्ययन में विशुद्ध रूप से प्रयोगात्मक परिचय होना चाहिए और इस प्रकार एक अनुभवजन्य चरण से तर्कसंगत तक आगे बढ़ना चाहिए।" -Herbert Spencer

(9) आगमन विधि का अनुसरण (Follow Inductive Method) – सामान्य नियम या सिद्धान्त निकलवाने से पहले उदाहरण दीजिए। इस सूत्र का अर्थ है- 'विशिष्ट से सामान्य की ओर' एवं 'उदाहरण से सामान्यीकरण की ओर'। छात्र को किसी भी विषय को दो विधियों से पढ़ाया जा सकता है-
1. निगमन विधि (Deductive Method) और 2. आगमन विधि (Inductive Method)। पहली विधि में प्रारम्भ में छात्रों के समक्ष कोई सामान्य नियम या सिद्धान्त रखा जाता है और फिर उदाहरणों द्वारा उसे स्पष्ट किया जाता है। दूसरी विधि में प्रारम्भ में उदाहरण दिये जाते हैं और फिर उनके आधार पर कोई सामान्य नियम या सिद्धान्त निकाला जाता है। दूसरी विधि अर्थात 'आगमन विधि' पहली विधि से कहीं अच्छी है। इसका कारण यह है कि छात्र उदाहरणों पर विचार करते हैं और स्वयं कोई नियम निकालते हैं। इस प्रकर वे मानसिक रूप से सक्रिय रहते हैं, जिससे सीखने का कार्य अधिक प्रभावपूर्ण हो जाता है। उदाहरणार्थ, ग्रेशम का नियम पढ़ाने के समय शिक्षक उनको स्वयं न बताकर छात्रों के समक्ष

उदाहरण प्रस्तुत करता है और फिर उन्हीं से उनका विश्लेषण कराता है। शिक्षक इस विश्लेषण में सुधार कर सकता है और कमियों को पूरा करके ग्रेशम के नियम से छात्रों को परिचित करा सकता है। इसी प्रकार विज्ञान के पाठ में नियम बताने से पूर्व प्रयोग किया जाना चाहिए।

10. प्रकृति का अनुसरण (Follow Nature) - बालक को उसकी प्रकृति के अनुसार शिक्षा दीजिए। शिक्षक को बालक की प्रकृति का सदैव ध्यान रखना चाहिए। बालक को जो भी शिक्षा दी जाय, उसके शारीरिक और मानसिक विकास के अनुरूप होनी चाहिए। ऐसा न करने से बालक के स्वाभाविक विकास में बाधा पड़ सकती है। बालक से ऐसा कोई भी कार्य शिक्षण का कार्य शिक्षक छात्रों के सामने कुछ विशिष्ट उदाहरण रखता है और छात्र उसकी परीक्षा करके उनसे सम्बन्धित सामान्य नियम निकालते हैं।

(11) 1 विश्लेषण से संश्लेषण की ओर (From Analysis to Synthesis)- बालक को सम्पूर्ण वस्तु का ज्ञान देने के बाद उसके अंगों में सामंजस्य स्थापित कीजिए उसके बाद
सम्पूर्ण वस्तु की ओर जाइए। शिक्षण में विश्लेषण और संश्लेषण-दोनों आवश्यक हैं, क्योंकि तभी बालक को किसी विषय का पूर्ण और निश्चित ज्ञान हो सकता है। विश्लेषण में पहले 1 सम्पूर्ण वस्तु का अध्ययन किया जाता है और फिर उसके विभिन्न भागों का। उदाहरणार्थ, भूगोल का शिक्षक छात्रों को पहले सम्पूर्ण पृथ्वी के बारे में, फिर जलवायु के अनुसार विभिन्न भागों के बारे में और उसके बाद प्रत्येक भाग में व्यक्तियों, पशुओं, वनस्पति आदि के बारे में बताता है। इतना विश्लेषण करने के लिए एक संश्लेषण करना आवश्यक है; क्योंकि तभी शिक्षक बालक के ज्ञान को निश्चित रूप दे सकता है। उदाहरणार्थ, किसी विशेष स्थान के व्यक्तियों, पशुओं और वनस्पति के बारे में बताने के बाद जीवन पर प्रभाव डालने वाली जलवायु के बारे में बताया जाता है। इसके बाद तुलना के द्वारा अन्य स्थानों का ऐसा ही अध्ययन किया जाता है। अन्त में सब भागों में सामंजस्य स्थापित किया जाता है और सम्पूर्ण पृथ्वी का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार विश्लेषण द्वारा जो भाग अलग अलग हो जाते हैं, वे संश्लेषण द्वारा एक होकर सम्पूर्ण हो जाते हैं। इससे बालक को सब बातों का एक साथ सम्पूर्ण ज्ञान को हो जाता है। अत: हम कह सकते हैं कि "विश्लेषण बालक को किसी बात को समझने में सहायता देता है और संश्लेषण उस बात के उसके ज्ञान को निश्चित रूप देता है।"

"विश्लेषण बच्चे को किसी चीज़ को समझने में सक्षम बनाता है और संश्लेषण उसके ज्ञान को निश्चित बनाता है।"

(12) मनोवैज्ञानिक से क्रमबद्धता 2 की ओर (From Psychological to Logical) बालक की शिक्षा को उसकी रुचियों, स्थानों आदि के अनुसार प्रारम्भ कीजिए और जैसे-जैसे उसका ज्ञान बढ़ता जाय, वैसे-

वैसे उसे क्रमबद्धता की ओर ले जाइए।

बालक को शिक्षा देने की दो विधियाँ हैं-

1. मनोवैज्ञानिक और 2. क्रमबद्ध। रायबर्न (Rybum) के अनुसार, "मनोवैज्ञानिक विधि का सम्बन्ध बालक और पाठ्य-वस्तु के प्रति उसकी प्रतिक्रियाओं तथा रुचियों से है। क्रमबद्ध विधि का सम्बन्ध पाठ्य-वस्तु और एक निश्चित क्रम में उसके आयोजन से है। इन दोनों विधियों को उदाहरण देकर स्पष्ट किया जा सकता है। मान लीजिए- शिक्षक छात्रों को भाषा का शिक्षण देना चाहता है। अब यदि वह मनोवैज्ञानिक विधि का अनुसरण करता है, तो वह अपने शिक्षण को वाक्य से प्रारम्भ करेगा। पर यदि वह क्रमबद्ध विधि का अनुसरण करता है तो वह वर्णों और ध्वनियों से प्रारम्भ करेगा। स्पष्ट रूप से दूसरी विधि में बालक रुचि नहीं लेते हैं। वर्णों और ध्वनियों की अपेक्षा उन्हें वाक्यों में अधिक आनन्द आता है। अत: छोटे बालकों के लिए मनोवैज्ञानिक विधि को ही अपनाना अच्छा है। जैसे-जैसे उनके ज्ञान में वृद्धि होती जाय, वैसे-वैसे इस विधि कि कमबुद्ध विधि को दिया जाय। शिक्षण का कार्य नहीं करवाना चाहिए, जो उसकी शारीरिक और मानसिक शक्ति के बाहर हो। उसे अपने स्वाभाविक विकास का पूर्ण अवसर दिया जाना चाहिए। लैंडन का कथन है कि "हमारा शिक्षण और प्रशिक्षण बालक के विकास के नियमों और उसके मस्तिष्क के कार्य करने की विधियों के अनुरूप होना चाहिए। "हमारा शिक्षण और प्रशिक्षण बच्चे के विकास के नियमों और मस्तिष्क के कार्य करने के तरीकों के अनुरूप होना चाहिए।" - जोसेफ लैंडर

13. स्वाध्याय को प्रोत्साहन (Encouragement of Self Study) - छात्र को स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित कीजिए। सर्वोत्तम शिक्षकों ने स्वाध्याय पर छात्र की अपनी स्वयं की शक्तियों द्वारा ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करने के महत्त्व पर सदैव बल दिया है। वे शिक्षा देने की अपेक्षा प्रशिक्षण देने पर अधिक निर्भर रहे हैं। उन्होंने छात्रों को अपनी स्वयं की शिक्षा में सक्रिय साझीदार रखा है। रगबी (Rugby) के प्रसिद्ध हेडमास्टर डॉक्टर अरनाल्ड (Arnold) ने इसी भावना से प्रेरित होकर कार्य किया। उसने छात्रों को स्वयं अपने ऊपर निर्भर होने और अपने स्वयं के सक्रिय प्रयास द्वारा अपनी शक्तियों को विकसित करने की शिक्षा दी। इसका कारण स्पष्ट है, छात्र अपने स्वयं के प्रयास से जो ज्ञान प्राप्त करते हैं, वह उनके व्यक्तित्व का स्थायी अंग बन जाता है। अत: शिक्षक को अपने छात्रों को स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। स्कॉट के इस कथन में पूर्ण सत्यता है, "प्रत्येक मनुष्य की शिक्षा का सर्वोत्तम भाग वही है, जो उसने स्वयं प्राप्त किया है।" "प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा का सबसे अच्छा हिस्सा वह है जो उसे स्वयं देता है।" -सर वाल्टर स्कॉट प्रत्येक शिक्षक को इस शिक्षण सूत्रों का भली-भाँति ज्ञान होना चाहिए। यह आवश्यक नहीं है कि

सभी शिक्षण सूत्रों का सब कक्षाओं के छात्रों के लिए प्रयोग किया
जाय । परन्तु यह वांछनीय है कि शिक्षण को सफल बनाने के लिए अधिक से अधिक शिक्षण सूत्रों का प्रयोग किया जाये।

निष्कर्ष

इस सूत्र के अनुसार किसी घटना या तथ्य की जानकारी पहले समग्र रूप में कराकर फिर उसके विविध भागों को व्याख्या व विश्लेषण द्वारा स्पष्ट किया जाना चाहिए तत्पश्चात उन भागों या खण्डों को आपस में जोड़कर पूरी जानकारी कराकर निष्कर्ष तक पहुंचना चाहिए। शिक्षण में विश्लेषण व संश्लेषण दोनों आवश्यक हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार डॉ सुदेश सिंह साहित्य प्रकाशन, आगरा
2. शिक्षक के सिद्धांत एवं विधियां पी डी, पाठक जे.सी. अग्रवाल श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
3. शिक्षण के सिद्धांत एवं विधियां आर. के. सिंह अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा
4. शिक्षा के सामान्य सिद्धांत - गुरुसरन दास त्यागी श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा

Sources

1	https://sarkariguider.in/maxims-of-teaching-in-hindi/ INTERNET 9%
2	https://www.teachingworld.in/maxims-of-teaching-and-teaching-principles/ INTERNET 1%
3	https://hindibag.com/शिक्षण-सूत्र/ INTERNET <1%

EXCLUDE CUSTOM MATCHES	OFF
EXCLUDE QUOTES	ON
EXCLUDE BIBLIOGRAPHY	ON